4 सन्धि

सन्धि का अर्थ मेल होता है। अतः निकटवर्ती दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे सन्धि कहते हैं। सन्धि योजना में पहले शब्द का अन्तिम अक्षर और दूसरे शब्द का प्रथम अक्षर ग्रहण किया जाता है। जैसे– पुस्तकालयः (पुस्तक+आलयः) में अ और आ मिलकर 'आ' हो गया है। सन्धि किये हुए शब्दों को अलग-अलग करना सन्धि-विच्छेद कहलाता है।

सन्धि के भेद

सन्धि के तीन भेद हैं— (क) स्वर सन्धि, (ख) व्यञ्जन सन्धि, (ग) विसर्ग सन्धि।

(क) स्वर सन्धि— स्वर वर्ण का स्वर वर्ण के साथ जो मेल होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे — नर+ईशः = नरेशः। यहाँ नर के अन्त में 'अ' और ईशः के आदि में 'ई' है। दोनों मिलकर 'ए' हो गया है, अतः स्वर सन्धि है।

विशेष — स्वर सन्धि को अच् सन्धि भी कहा जाता है। स्वर सन्धि में जो व्यञ्जन आधे लिखे हुए नहीं होते और उनके अन्त में हलन्त का चिह्न लगा हुआ नहीं होता, वे सभी अपने अन्त में किसी स्वर को अवश्य रखते हैं। जैसे – र में 'अ', कि में 'इ', कु में 'उ' है।

(ख) व्यञ्जन सन्धि — जिसमें पहले शब्द या भाग का अन्तिम अक्षर व्यञ्जन और दूसरे शब्द या भाग के पहले व्यञ्जन या स्वर हों, उनके मेल को व्यञ्जन सन्धि कहते हैं अथवा व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन अक्षर आने पर जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। जैसे — जगत् + ईशः = जगदीशः। यहाँ 'त्' व्यंजन के बाद 'ई' स्वर आया है, अतः व्यञ्जन सन्धि है।

(ग) विसर्ग सन्धि — जिसमें पहले शब्द के अन्त में विसर्ग हो और दूसरे शब्द का पहला अक्षर स्वर या व्यञ्जन हो, तो उनके मेल को विसर्ग सन्धि कहते हैं या विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन के मिलने से जो विकार होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे— भाः + करः। यहाँ विसर्ग के बाद व्यञ्जन है, अतः विसर्ग सन्धि है।

(क) स्वर अथवा अच् सन्धि

परिभाषा – 'पर तथा पूर्व स्वरों के मिलने से जो विकार होता है उसे स्वर कहते हैं।' यथा — रवि+इन्द्रः=रवीन्द्रः। यहाँ इ+इ=ई हुआ है। इ तथा इ दोनों ही स्वर हैं, अतः यहाँ स्वर सन्धि है।

स्वर सन्धि के प्रमुख भेद निम्न प्रकार से हैं—

1. दीर्घ सन्धि

सूत्र – अकः सवर्णे दीर्घः

परिभाषा — "जब अ, आ, इ, ई, उ, ऊ एवं ऋ वर्ण के पश्चात् इनके सवर्ण वर्ण आते हैं तो क्रमशः आ, ई, ऊ और ॠ बन जाते हैं तब दीर्घ सन्धि कहलाती है।"

उदाहरण (1) **(अ या आ के पश्चात् अ या आ = आ)**

हिम	+	आलयः	=	हिमालयः।
विद्या	+	अर्थी	=	विद्यार्थी।
विद्या	+	आलयः	=	विद्यालयः।
पुस्तक	+	आलयः	=	पुस्तकालयः।
वाचन	+	आलयः	=	वाचनालयः।
शस्त्र	+	आगारः	=	शस्त्रागारः।
अद्य	+	अपि	=	अद्यापि।

(2) (इ या ई के पश्चात् इ या ई = ई)

रवि	+	इन्द्रः	=	रवीन्द्रः।
कपि	+	ईशः	=	कपीशः।
गौरी	+	ईशः	=	गौरीशः।
मुनि	+	इन्द्रः	=	मुनीन्द्रः।
सती	+	इन्द्रः	=	सतीन्द्रः।
श्री	+	ईशः	=	श्रीशः।

(3) (उ या ऊ के पश्चात् उ या ऊ = ऊ)

भानु	+	उदयः	=	भानूदयः।
वधू	+	उत्सवः	=	वधूत्सवः।
लघु	+	उर्मिः	=	लघूर्मिः।
विधु	+	उदयः	=	विधूदयः।
गुरु	+	उपदेशः	=	गुरूपदेशः।
साधु	+	उक्तम्	=	साधूक्तम्।

(4) (ऋ या ॠ के पश्चात् ऋ या ॠ = ॠ)

मातृ	+	ॠणम्	=	मातॄणम्।
होतृ	+	ऋकारः	=	होतॄकारः।

2. गुण सन्धि

सूत्र – आद्गुणः

परिभाषा — यदि अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ और ऌ आते हैं तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् गुण हो जाता है।

उदाहरण – (1) अ या आ के बाद इ या ई आने पर = ए

उप + इन्द्रः	= उपेन्द्रः	अ + इ	= ए
सुर + ईशः	= सुरेशः	अ + ई	= ए
राजा + इन्द्रः	= राजेन्द्रः	आ + इ	= ए
रमा + ईशः	= रमेशः	आ + ई	= ए

(2) अ या आ के बाद उ या ऊ आने पर = ओ

हित + उपदेशः	= हितोपदेशः	अ + उ	= ओ
महा + उत्सवः	= महोत्सवः	आ + उ	= ओ
पीन + ऊरुः	= पीनोरुः	अ + ऊ	= ओ
गङ्गा + ऊर्मिः	= गङ्गोर्मिः	आ + ऊ	= ओ

(3) अ या आ के बाद ऋ आने पर = अर्

देव + ऋषिः	= देवर्षिः	अ + ऋ	= अर्
महा + ऋषिः	= महर्षिः	आ + ऋ	= अर्
ग्रीष्म + ऋतुः	= ग्रीष्मर्तुः	अ + ऋ	= अर्

(4) अ या आ के बाद ऌ आने पर = अल्

तव + ऌकारः	= तवल्कारः	अ + ऌ	= अल्

3. वृद्धि सन्धि

सूत्र-वृद्धिरेचि

परिभाषा– जब अ या आ के बाद ए या ऐ अथवा ओ या औ आते हैं तो क्रमशः ऐ और औ हो जाते हैं और तब वृद्धि सन्धि होती है।

उदाहरण 1– (अ या आ के बाद ए या ऐ = ऐ)

सदा	+	एव	=	सदैव।
न	+	एवम्	=	नैवम्।
म	+	एवम्	=	मैवम्।
लता	+	एषा	=	लतैषा।
देव	+	ऐश्वर्यम्	=	देवैश्वर्यम्।
मत	+	ऐक्यम्	=	मतैक्यम्।
धन	+	एषणा	=	धनैषणा।

2– (अ या आ के बाद ओ या औ = औ)

वन	+	औषधिः	=	वनौषधिः।
जल	+	ओधः	=	जलौधः।
देव	+	औदार्यम्	=	देवौदार्यम्।
महा	+	औषधिः	=	महौषधिः।
वन	+	ओकसः	=	वनौकसः।
पुष्प	+	ओकः	=	पुष्पौकः।

4. यण् सन्धि

सूत्र–इकोयणचि

परिभाषा– यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ (इक्) के बाद असमान स्वर आये तो उनके स्थान में क्रमशः य्, र्, ल् (यण्) हो जाता है।

उदाहरण 1– इ या ई के बाद कोई असमान स्वर आने पर = य् + स्वर

यदि + अपि	= यद्यपि	इ + अ	= य
इति + आदि	= इत्यादि	इ + आ	= या
सुधी + उपास्यः	= सुध्युपास्यः	ई + उ	= यु
नदी + ऊर्मिः	= नद्यूर्मिः	ई + ऊ	= यू
अभि + उदयः	= अभ्युदयः	इ + उ	= यु

2– उ या ऊ के बाद असमान स्वर आने पर = व् + स्वर

मधु + अरिः	= मध्वरिः	उ + अ	= व
सु + आगतम्	= स्वागतम्	उ + आ	= वा
वधू + आदेशः	= वध्वादेशः	ऊ + आ	= वा

3– ऋ के बाद असमान स्वर आने पर = र् + स्वर

पितृ + आदेशः	= पित्रादेशः	ऋ + आ	= रा
धातृ + अंशः	= धात्रंशः	ऋ + अं	= रं

4– ऌ के बाद असमान स्वर आने पर = ल् + स्वर

ऌ + आकृतिः	= लाकृतिः	ऌ + आ	= ला

5. अयादि सन्धि

सूत्र–एचोऽयवायावः

परिभाषा–"जब ए, ऐ, ओ और औ से परे कोई स्वर वर्ण हो तो ए को अय्/ऐ को आय्/ओ को अव् और औ को आव् आदेश हो जाते हैं, तब अयादि सन्धि होती है।"

उदाहरण– 1– (ए के बाद कोई स्वर = अय् + स्वर वर्ण)

चे	+	अनम्	=	चयनम्।

ने	+	अनम्	=	नयनम्।
शे	+	अनम्	=	शयनम्।
संचे	+	अनम्	=	संचयनम्।

2– (ऐ के बाद कोई स्वर = आय् + स्वर वर्ण)

नै	+	अकः	=	नायकः।
गै	+	इका	=	गायिका।
शै	+	अकः	=	शायकः।
दै	+	अकः	=	दायकः।

3– (ओ के बाद कोई स्वर = आव् + स्वर वर्ण)

पो	+	अनः	=	पवनः।
भो	+	अनम्	=	भवनम्।
साधो	+	ए	=	साधवे।
श्रो	+	अनम्	=	श्रवणम्।

4– (औ के बाद कोई स्वर = आव् + स्वर वर्ण)

एतौ	+	अपि	=	एतावपि।
द्वौ	+	एव	=	द्वावेव।
बालकौ	+	अपि	=	बालकावपि।
पौ	+	अकः	=	पावकः।
पौ	+	अनः	=	पावनः।
भौ	+	उकः	=	भावुकः।
श्रौ	+	इका	=	श्राविका।

6. पूर्वरूप सन्धि

सूत्र– ''एङः पदान्तादति''

परिभाषा–''जब पदान्त में ए या ओ होता है और उसके पश्चात् 'अ' आता है तो 'अ' को पूर्वरूप अर्थात् अ अपना रूप छोड़कर पूर्व वर्ण जैसा हो जाता है और 'अ' का संकेत (ऽ) रह जाता है, तब पूर्वरूप सन्धि होती है।''

उदाहरण– 1– (ए के बाद अ = ऽ)

एते	+	अपि	=	एतेऽपि।
हरे	+	अव	=	हरेऽव।
रमे	+	अत्र	=	रमेऽत्र।
गते	+	अत्र	=	गतेऽत्र।

2– (ओ के बाद अ = ऽ)

को	+	अपि	=	कोऽपि।
विष्णो	+	अव	=	विष्णोऽव।
बालको	+	अपि	=	बालकोऽपि।
रामो	+	अवति	=	रामोऽवति।
शिवो	+	अर्च्यः	=	शिवोऽर्च्यः।
को	+	अवादीत्	=	कोऽवादीत्।

7. पररूप सन्धि

सूत्र–''एङि् पररूपम्''

परिभाषा–अकारान्त उपसर्ग के बाद ए या ओ से प्रारम्भ धातु रूप होने पर पररूप हो जाता है।

उदाहरण– प्र + एजते = प्रेजते प्र् + अ + एजते = अ का लोप होने पर प्र् + ए + जते = प्रेजते
प्र + ओषति = प्रोषति प्र् + अ + ओषति = अ का लोप होने पर प्र् + ओषति = प्रोषति
उप + ओषति = उपोषति उप् + अ + ओषति = अ का लोप होने पर = उप् ओषति = उपोषति।

स्वर सन्धि–चक्र

सन्धि का नाम	सूत्र	अर्थ	प्रयोग
1. यण् सन्धि	इकोयणचि	उ, ऋ, ऌ के आगे भिन्न स्वर आने पर क्रम से य्, व्, र्, ल्, होता है।	यदि + अपि = यद्यपि। प्रति + उपकार = प्रत्युपकार। साधु + आगमनम् = साध्वागमनम्। मातृ + आदेशः = मात्रादेशः। ऌ + आकृतिः = लाकृतिः।
2. अयादि सन्धि	एचोऽयवायावः	ए, ओ, ऐ, औ के बाद स्वर वर्ण आने पर क्रम से अय्, अव्, आय्, आव् होता है।	हरे + ए = हरये। भानो + ए = भानवे। नै + अकः = नायकः। पौ + अनः = पावनः।
3. गुण सन्धि	आद्गुणः	अ, आ के बाद इ, उ, ऋ, आने पर क्रमशः ए, ओ, अर् हो जाता है।	सुर + ईशः = सुरेशः। सूर्य + उदयः = सूर्योदयः। देव + ऋषिः = देवर्षिः।
4. वृद्धि सन्धि	वृद्धिरेचि	अ वर्ण के बाद ए, ऐ, ओ, औ आवे तो ऐ तथा औ हो जाता है।	तथा + एकः = तथैकः। महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्। जल + औधः = जलौधः। महा + औषधिः = महौषधिः।
5. दीर्घ सन्धि	अकः सवर्णे दीर्घः	अ, इ, उ, ऋ के आगे, समान वर्ण आने पर दोनों का दीर्घ हो जाता है।	शिव + आलयः = शिवालयः। गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः। लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः। पितृ + ऋणम् = पितॄणम्।

➨ बहुविकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. **'रमेशः' का सन्धि-विच्छेद होता है–**
(क) रम + ईशः (ख) रमे + ईशः (ग) रमा + ईशः (घ) रमे + ईशः
उत्तर – (ग) रमा + ईशः।

2. **'साधुष्वपि' का सन्धि-विच्छेद होता है–**
(क) साधुसु + अपि (ख) साधुशु + अपि (ग) साधुषु + अपि (घ) साधूषु + अपि
उत्तर – (ग) साधुषु + अपि।

3. **'नायकः' का सन्धि-विच्छेद होता है–**
(क) न + अयकः (ख) ने + अकः (ग) नै + अकः (घ) नौ + अकः
उत्तर – (ग) नै + अकः।

4. 'गङ्गोदकम्' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद् गुणः (ग) इको यणचि (घ) वृद्धिरेचि
उत्तर – (ग) इको यणचि।

5. 'हरीशः' का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) हर + इशः (ख) हरि + इशः (ग) हरि + ईशः (घ) हरी + ईशः
उत्तर – (ग) हरि + ईशः।

6. परोपकारः में किस सूत्र से सन्धि कार्य होता है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) वृद्धिरेचि (घ) इकोयणचि
उत्तर – (ख) आद्गुणः।

7. देवैश्वर्यम् में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) आद्गुणः (ख) एङः पदान्तादति (ग) वृद्धिरेचि (घ) एङिपररूपम्
उत्तर – (ग) वृद्धिरेचि।

8. 'रमेशः' शब्द में किस सूत्र से सन्धि कार्य होता है?
(क) वृद्धिरेचि (ख) आद्गुणः (ग) एङिपररूपम् (घ) अकः सवर्णे दीर्घः
उत्तर – (ख) आद्गुणः।

9. विद्यालय में सन्धि-विच्छेद होगा–
(क) विद्या + लय (ख) विद्या + आलयः (ग) विद्याल + य (घ) वि + द्यालय
उत्तर – (ख) विद्या + आलयः।

10. सुरेशः का सन्धि-विच्छेद होता है 'सुर + ईशः' बताइए इसमें किस सूत्र से सन्धि की गयी है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) इकोयणचि (घ) उरण रपरः
उत्तर – (ख) आद्गुणः।

11. 'यद्यपि' शब्द का संधि-विच्छेद क्या होता है?
(क) यदी + अपि (ख) यदी + यपि (ग) यदि + अपि (घ) यदि + यपि
उत्तर – (ग) यदि + अपि।

12. 'वाक् + ईशः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) झलाँ जशोऽन्ते (घ) स्तोः श्चुनाश्चुः
उत्तर – (ख) आद्गुणः।

13. विद्या + आलयः में निम्नलिखित में से किस सूत्र से सन्धि हुई है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) इकोयणचि (ग) आद्गुणः (घ) शात्
उत्तर – (क) अकः सवर्णे दीर्घः।

14. 'नायकः' इस पद का सन्धि-विच्छेद निम्नालिखित में से कौन-सा सही है?
(क) ने + अकः (ख) ना + यकः (ग) नाय + कः (घ) नै + अकः
उत्तर – (घ) नै + अकः।

15. 'गुर्वादेशः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) वृद्धिरेचि (ग) इकोयणचि (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) इकोयणचि।

16. 'प्रेजते' शब्द का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) प्रे + जते (ख) प्र + एजते (ग) प्रे + एजेत (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) प्र + एजते।

17. गुर्वादेशः का सन्धि-विच्छेद होता है?
(क) गुर्व + आदेशः (ख) गुर + आदेशः (ग) गु + वादेशः (घ) गुरु + आदेशः
उत्तर – (घ) गुरु + आदेशः।

18. 'पवनः' पद का उचित सन्धि-विच्छेद है–
(क) पव + अनः (ख) पो + अनः (ग) पव + अनः (घ) पौ + अनः
उत्तर – (ख) पो + अनः।

19. 'रामायोपहारः' इसका सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) रामा + योपहारः (ख) रामायो + पहारः (ग) राम + आयोपहारः (घ) रामाय + उपहारः
उत्तर – (घ) रामाय + उपहारः।

20. 'गङ्गोदकम्' इसका सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) गङ्गो + दकम् (ख) गङ्ग + ओदकम् (ग) गङ्गा + ओदकम् (घ) गङ्गा + उदकम्
उत्तर – (घ) गङ्गा + उदकम्।

21. 'रक्षोपायः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) वृद्धिरेचि (ख) अकः सवर्णे दीर्घः (ग) आद्गुणः (घ) इकोयणचि
उत्तर – (ग) आद्गुणः।

22. 'चन्द्रोदयः' में किस सूत्र से सन्धि की गयी है?
(क) वृद्धिरेचि (ख) एङि पररूपम् (ग) आद्गुणः (घ) अतो रोरप्लुतादप्लुते
उत्तर – (ग) आद्गुणः।

23. 'नीतीयम्' का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) नीती + ईयम् (ख) नीति + इयम् (ग) नीती + इयम (घ) नीत + ईयम्
उत्तर – (ख) नीति + इयम्।

24. प्रत्यर्पणम् पद का सन्धि विच्छेद होता है–
(क) प्रत्य + अर्पणम् (ख) प्रति + अर्पणम् (ग) प्रती + अर्पणम् (घ) प्रति + यर्पणम्
उत्तर – (ख) प्रति + अर्पणम्

25. 'यद्यपि' इस पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) य + द्यपि (ख) यद्य + पि (ग) यदि + अपि (घ) यद् + यपि
उत्तर – (ग) यदि + अपि।

26. 'साधुष्वपि' का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) साधुसु + अपि (ख) साधुशु + अपि (ग) साधुषु + अपि (घ) साधूषु + अपि
उत्तर – (ग) साधुषु + अपि।

27. 'उपर्युक्तः' पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) उपरि + उक्तः (ख) उपर + युक्तः (ग) उपर + ओक्तः (घ) उप + रोक्तः
उत्तर – (क) उपरि + उक्तः।

28. 'सूर्योदयः' में सन्धि है–
(क) आद्गुणः सूत्र से (ख) अकः सवर्णे दीर्घः सूत्र से
(ग) वृद्धिरेचि सूत्र से (घ) इको यणचि सूत्र से
उत्तर – (क) आद्गुणः सूत्र से।

29. 'गणेश' पद में सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) गणे + ईशः (ख) गणा + ईशः (ग) गण + ईशः (घ) गण + इशः
उत्तर – (ग) गण + ईशः।

30. 'विद्यालयः' में किस सूत्र से सन्धि की गयी है?
(क) इकोयणचि (ख) आद्गुणः (ग) अकः सवर्णे दीर्घः (घ) एचोऽयवायावः
उत्तर – (ग) अकः सवर्णे दीर्घः।

31. 'मिथ्याचारः' का सही सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) मिथ्या + आचारः (ख) मिथ्य + आचारः (ग) मिथि + आचारः (घ) मिथ् + आचारः
उत्तर – (क) मिथ्या + आचारः।

32. 'यद्यत्र' में सन्धि किस सूत्र से होती है?
(क) एचोऽयवायावः (ख) इकोयणचि (ग) अकः सवर्णे दीर्घः (घ) आद्गुणः
उत्तर – (ख) इकोयणचि।

33. 'महेशः' पद का सन्धि-विच्छेद है–
(क) महा + ईशः (ख) महे + अशः (ग) मह + इशः (घ) महा + इशः
उत्तर – (क) महा + ईशः।

34. 'शिवालयः' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) इको यणचि (ख) आद्गुणः (ग) अकः सवर्णे दीर्घः (घ) एङिपररूपम्
उत्तर – (ग) अकः सवर्णे दीर्घः।

35. 'पावकः' का सन्धि-विच्छेद है–
(क) पो + अकः (ख) पौ + अकः (ग) पा + वकः (घ) प + आवकः
उत्तर – (ख) पौ + अकः।

36. 'इत्याह' पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) इति + आह (ख) इती + आह (ग) इती + अह (घ) इति + अह
उत्तर – (क) इति + आह।

37. 'दैत्यारिः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) आद्गुणः (ख) इको यणचि (ग) झलां जश् झशि (घ) अकः सवर्णे दीर्घः
उत्तर – (घ) अकः सवर्णे दीर्घः।

38. 'पश्योपरि'' का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) पश्य + उपरि (ख) पश्य् + उपरि (ग) पश्य् + ऊपरि (घ) पशय + उपरि
उत्तर – (क) पश्य + उपरि।

39. 'मधु + अरिः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) इकोयणचि (ख) आद्गुणः (ग) एचोऽयवायावः (घ) अकः सवर्णे दीर्घः
उत्तर – (क) इकोयणचि।

40. 'स्वागतम्' पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) स्व + आगतम् (ख) सू + आगतम् (ग) सु + आगतम् (घ) स्व + गतम्
उत्तर – (ग) सु + आगतम्।

41. 'महोत्सवः' में किस सूत्र से सन्धि कार्य होता है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) वृद्धिरेचि (घ) एङिपररूपम्।
उत्तर – (ख) आद्गुणः।

42. 'इत्यादि' शब्द का सन्धि-विच्छेद क्या होता है?
(क) इत् + यादि (ख) इत्या + दि (ग) इति + आदि (घ) इत्य + आदि
उत्तर – (ग) इति + आदि।

43. 'गङ्गोदकम्' पद में सन्धि-विच्छेद होगा–
(क) गङ्गो + दकम् (ख) गङ्गा + उदकम् (ग) गङ्ग् + ओदकम् (घ) गङ्ग + ओदकम्
उत्तर – (ख) गङ्गा + उदकम्।

44. 'नयनम्' पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) न + यनम् (ख) नय + नम् (ग) नै + अनम् (घ) ने + अनम्
उत्तर – (घ) ने + अनम्।

45. 'इत्यादि' पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) इति + आदि (ख) इति + अदि (ग) इती + आदि (घ) इत + आदि
उत्तर – (क) इति + आदि।

46. 'वसन्तोत्सवः' में किस सूत्र से सन्धि कार्य होता है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) इको यणचि (घ) एङि पररूपम्
उत्तर – (ख) आद्गुणः।

47. 'हिमालयः' पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) हिमा + लयः (ख) हिमा + आलयः (ग) हिम + आलयः (घ) हिम + अलयः
उत्तर– (ग) हिम + आलयः।

48. 'सप्त + ऋषिः' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) वृद्धिरेचि (घ) एचोऽयवायावः
उत्तर– (ख) आद्गुणः।

49. 'तीर्थोदकम्' पद में किस सूत्र से सन्धि-कार्य होता है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) इकोयणचि (घ) एङिपररूपम्
उत्तर– (ख) आद्गुणः।

50. 'मध्वरिः' का सन्धि-विच्छेद है–
(क) मधू + अरिः (ख) मध् + वरिः (ग) मधो + अरिः (घ) मधु + अरिः
उत्तर– (घ) मधु + अरिः।

51. 'प्रेजते' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) इको यणचि (ख) अकः सवर्णे दीर्घः (ग) आद्गुणः (घ) एङिपररूपम्
उत्तर– (घ) एङिपररूपम्।

52. 'राजेन्द्रः' पद में सन्धि-कार्य किस सूत्र से हुआ है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) वृद्धिरेचि (घ) खरिच
उत्तर– (ख) आद्गुणः।

53. 'प्रत्युवाच' का सन्धि-विच्छेद है–
(क) प्रती + उवाच (ख) पत्यु + वाच (ग) प्रते + उवाच (घ) प्रति + उवाच
उत्तर– (घ) प्रति + उवाच।

54. 'महा+ऋषिः' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) वृद्धिरेचि (घ) एचोऽयवायावः
उत्तर– (ख) आद्गुणः।

55. 'हर्यश्वः' का सन्धि-विच्छेद है–
(क) हरी+अश्वः (ख) हरे+अश्वः (ग) हरि+अश्वः (घ) हरिः+अश्वः
उत्तर– (ग) हरि+अश्वः।

56. 'कूपोदकम्' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) इको यणचि (ख) अकः सवर्णे दीर्घः (ग) आद्गुणः (घ) एङिपररूपम्
उत्तर– (ग) आद्गुणः।

57. 'हरये' का सन्धि-विच्छेद है–
(क) हर+ये (ख) हरे+अ (ग) हरि+ए (घ) हरे+ए
उत्तर– (घ) हरे+ए।

58. 'उपेन्द्रः' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) आद्गुणः (ख) इको यणचि (ग) एचोऽयवायावः (घ) एङः पदान्तादति
उत्तर– (क) आद्गुणः।

59. 'अत्रैकः' पद में सन्धि-कार्य किस सूत्र से हुआ है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) वृद्धिरेचि (ग) इको यणचि (घ) आद्गुणः
उत्तर– (ख) वृद्धिरेचि।

●●